POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A-III (Hons.), Paper-V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

लोकप्रशासन का क्षेत्र

परिवर्तनशील, गतिशील एवं सृजनात्मक तत्वों से परिपूर्ण लोक प्रशासन समयकाल के अनुसार स्वयं में बदलाव लाता हुआ विकसित हुआ है। इसकी परिभाषा व इसके क्षेत्र को किसी सीमा रेखा में नहीं बांधा जा सका है। इसके अध्ययन क्षेत्र को लेकर विद्वानों में मतभेद है। मतभेद इस बात को लेकर है कि लोक प्रशासन शासकीय कामकाज का केवल प्रबन्धकारी अंश है अथवा सरकार के समस्त अंगों का समग्र अध्ययन। इसमें मूलतः क्षेत्र के संबंध में चार दृष्टिकोण प्रचलित हैं –

① व्यापक दृष्टिकोण

एल. डी. व्हाइट, मार्क्स, विलोबी, आदि विद्वानों ने लोक प्रशासन के क्षेत्र के सम्बंध में व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन सरकार के तीनों अंगों – कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका से सम्बंधित है। व्हाइट के अनुसार, "लोक प्रशासन में वे सभी कार्य आते हैं जिनका उद्देश्य सार्वजनिक नीति को पूरा करना अथवा लागू करना होता है।"

Scanned with CamScanner

② संकुचित दृष्टिकोण

साइमन, लूथर गुलिक आदि ने लोक प्रशासन के क्षेत्र के सम्बंध में संकुचित दृष्टिकोण अपनाया है। उनका मानना है कि लोक प्रशासन का सम्बंध शासन की केवल कार्यपालिका से है। साइमन के अनुसार "लोक प्रशासन से अभिप्राय उन क्रियाओं से है जो केंद्र, राज्य तथा स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखाओं द्वारा सम्पादित की जाती है।

③ पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण :-

लूथर गुलिक ने 'पोस्डकॉर्ब' दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है। पोस्डकॉर्ब अंग्रेजी के सात शब्दों के प्रथम अक्षरों से मिलकर बना है जो इस प्रकार है — POSDCORB

P — Planning
O — Organising
S — Staffing
D — Directing
CO — Co-ordination
R — Reporting
B — Budgeting

उपर्युक्त पोस्डकॉर्ब क्रियाएं किसी संगठन

Scanned with CamScanner

में सम्पन्न की जाती है। प्रशासन का चाहे कोई भी क्षेत्र हो प्रबन्ध सम्बंधी सामान्य समस्याएं एक जैसी रहती हैं।

(4) लोककल्याणकारी दृष्टिकोण

लोकप्रशासन के क्षेत्र से सम्बंधित एक अन्य दृष्टिकोण है लोककल्याणकारी दृष्टिकोण। इसे आदर्शवादी दृष्टिकोण भी कहा जाता है। इसके समर्थक राज्य और लोक प्रशासन में अधिक अंतर नहीं मानते। उनके अनुसार वर्तमान समय में राज्य लोककल्याणकारी है अत: लोक प्रशासन भी लोककल्याणकारी है। दोनों का लक्ष्य एक ही है - जनहित अथवा जनता को हर प्रकार से सुखी बनाया जाए। इसके समर्थकों का मानना है कि "आज लोकप्रशासन सभ्य जीवन का रक्षक मात्र ही नहीं वह सामाजिक न्याय एवं सामाजिक परिवर्तन का भी महान साधन है।"

इसप्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में लोक प्रशासन के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी हुई है। यह जनकल्याणकारी, समाजवादी विचारधारा के साथ-साथ निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।

Shama Ara

Scanned with CamScanner